दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-4

(प्रश्न पत्र-II)

515
MKN
Delhi

DTVF / OPT-24	**HL-2404**

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): Karmveer Narwadia

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 4 / 4 Aug. 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	0	5	5	9	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Drishti The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखियेः

10 × 5 = 50

(क) दोपहर की उस घड़ी में मीडोज अलसाया-सा उँघता जान पड़ता था। जब हवा का कोई भूला-भटका झोंका आ जाता था, तब चीड़ के पत्ते खड़खड़ा उठते थे। कभी कोई पक्षी अपनी सुस्ती मिटाने झाड़ियों से उड़कर नाले के किनारे बैठ जाता था, पानी में सिर डुबोता था, फिर उड़कर हवा में दो चार निरुद्देश्य चक्कर काटकर दुबारा झाड़ियों में दुबक जाता था।

किन्तु जंगल की खामोशी शायद कभी चुप नहीं रहती। गहरी नींद में डूबी सपनों-सी कुछ आवाजें नीरवता के हल्के झीने परदे पर सलवटें बिछा जाती हैं, मूक लहरों-सी तिरती हैं, मानो कोई दबे पाँव झाँककर अदृश्य संकेत कर जाता है, 'देखो, मैं यहाँ हूँ।'

उपरोक्त गद्यांश राजेन्द्र यादव द्वारा सम्पादित 'एक दुनिया समानान्तर' कहानी संकलन में निर्मल वर्मा की परिन्दें कहानी से उद्धृत है।

यह पंक्तियाँ पिकनिक पर लंच खत्म होने के बाद मीडोज के आलस्य से सन्दर्भित हैं।

निर्मल वर्मा जी सामाजिक मनोविज्ञान युक्त लेखक थे वे कहते हैं कि दोपहर मीडोस थोड़ा आलस्य से भर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गया है। उस समय हवा का झोंका चल रहा है जिससे चील के पत्ते उड़ रहे हैं। पक्षी अपनी नित्य क्रिया मे पानी पी रहे है तथा डुबकी लगा रहे हैं किन्तु जंगल मे यह खामोशी चुप ना रहकर सदा यह संदेश दे रही है कि कोई और भी उपस्थित है।

विशेष

(i) अन्तर्मन का चित्रण किया है।

(ii) प्रकृति के समावेशन से मनोभावों का चित्रण किया है।

(iii) बिम्बात्मक भाषा प्रयोग मे ली गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

उपरोक्त पंक्तियाँ भारतेन्दुयुगीन प्रमुख निबंधकार बालकृष्ण भट्ट के निबंध "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" से ली गई है। यह निबंध "निबंध निलय" नामक पुस्तक में संकलित है।

पंक्तियों मे भट्ट जी ने हिन्दू जाति मे वैदिक समय से लगातार हो रहे विभाजन की चर्चा की है।

निबन्धकार भट्ट जी कहते हैं वैदिक काल में हिन्दू जाति एक अकेली थी लेकिन समयक्रम में वह अनेक भागों मे विभाजित हो गई। जिससे नए-नए धर्मों तथा मत

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मत प्रवर्तकों की उत्पत्ति हुई है। आज भी हिन्दु जाति के असंख्य खण्ड हो रहे हैं।

विशेष

(i) लेखक ने मुहावरेदार या लोकोक्ति युक्त भाषा का प्रयोग किया है।

(ii) ऐतेहासिक वातावरण का पुट दिखता है।

(iii) ये पंक्तियाँ आज भी समाज मे परिलक्षित होती है। कहा जा सकता है कि सार्थकता बनी हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

प्रस्तुत पंक्तियाँ भारतीय नाटक परम्परा के ऐतिहासिक नाटककार जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' से ली गई है। जयशंकर प्रसाद जी ऐतिहासिक वातावरण को लेते हुए आधुनिक समस्याओं तथा वाद-विवादों को नाटक का विषय बनाते है।

ये पंक्तियाँ स्कंदगुप्त के पात्र मातृगुप्त तथा विदूषक के बीच संवाद का है, जहाँ मातृगुप्त उसे कविता के बारे मे बता रहा है।

मातृगुप्त को जब विदूषक कविता की महत्वत्ता पर प्रश्न पूछता है तब वे कहते है कि कविता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A, हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक भावों की श्रृंखला है जिससे एक संगीत की उत्पत्ति होती है जो अंधकार समाज में या व्यक्ति को प्रकाशित करती है, वही आत्मा को जड़ से, जड़ को चेतन से तथा बाह्य जगत का संबंध आन्तरिकता से बताती है।

विशेष

(i) पंक्तियों की भाषा प्रवाहमयी है।

(ii) तत्सम भाषा का प्रयोग हुआ है।

(iii) कविता के बारे मे ऐसा ही वर्णन शुक्ल जी "कविता क्या है" निबंध में करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है। मैं उस दिन का स्वागत करने को तैयार बैठा हूँ। ईश्वर वह दिन जल्द लाए। वह हमारे उद्धार का दिन होगा। हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं। यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक संपत्ति की यह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, तब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मँडराता रहेगा, हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे, जिस पर पहुँचना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश आधुनिक काल के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी के गोदान उपन्यास से लिया गया है। गोदान उपन्यास को आधुनिक काल का महाकाव्य कहा जा सकता है।

गोदान में पूँजीवाद का उदय तथा सामन्तवाद को ढहते हुए दिखाया गया है। राय साहब सामन्तवाद के प्रतीक है। उनके द्वारा ये पंक्तियाँ पार्टी में कही गई है।

राय साहब कहते है कि अब जल्द ही सामन्तवादी वर्ग की हस्ती मिटने वाली है क्योंकि पूँजीवादी सभ्यता का उदय हो रहा है। मैं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चाहता हूँ यह दिन जल्द आए जब तक हमारे पैरों में ये संपत्ति की जंजीरे बाहर नहीं निकलेगी तब तक हमारा अस्तित्व नहीं बन पाएगा। हम परिस्थिति का शिकार हो गए हैं और परिस्थितियाँ ही हमारा सर्वनाश कर रही हैं। ऐसी स्थिति मे मानवता के उच्च स्तर तक नहीं पहुँच पा रहे हैं, जहाँ तक पहुँचना सब का लक्ष्य होता है।

विशेष (i) पूँजीवादी सभ्यता का उदय दिखाया है।

(ii) संक्रमण काल का चित्रण है।

(iii) हिन्दुस्तानी भाषा शैली का प्रयोग किया है।

(iv) भाषा प्रवाहमयी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) नहीं, ये बातें गिने-चुने मूर्खों को छोड़कर, अब किसी को परेशान नहीं करतीं। परेशान करना तो दूर, क्षण-भर के लिए भी किसी के दिमाग में नहीं आतीं। कुछ बातें, कुछ तथ्य, कुछ स्थितियाँ प्रचलित होते-होते सबके बीच इस तरह स्वीकृति पा लेती हैं कि वे फिर लोगों की सोच की सीमा में रहती ही नहीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ बेलछी काण्ड के बाद मन्नू भण्डारी के उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया है जो दलित चेतना से संबद्ध काव्य है।

महाभोज में मन्नू भण्डारी ने दलित की मृत्यु पर हो रही राजनीति पर व्यंग्य किया है। ये पंक्तियाँ भी उसी सन्दर्भ मे आई है।

उपन्यास मे भण्डारी जी लिखती है कि इतना कुछ काण्ड हो गया फिर भी ये बातें कुछ ही लोगों को चुभती हैं। ये अब किसी को परेशान नहीं करती। परेशान करना तो दूर किसी के मस्तिष्क में भी नहीं आती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ये सब बातें इतनी सामान्य हो गयी है कि रोज-रोज का काम हो गया है जिससे मनुष्य की सोच समझ में ये इतना प्रभाव नहीं डाल पाती है।

विशेष

(i) "ह्यूमन साइकोलोजी" को वर्णित किया गया है।

(ii) भाषा प्रवाहमयी है।

(iii) तद्भव भाषा का प्रयोग किया है।

(iv) जनसामान्य के अनुकूल भाषा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'गोदान' भारतीय किसान के पूरे जीवन-संघर्ष और इसमें उसके पराभव की करुण गाथा है।' इस कथन के संदर्भ में 'गोदान' का विवेचन कीजिये। 20

'गोदान' प्रेमचंद जी का अन्तिम तथा सर्वोत्कृष्ट उपन्यास माना जाता है। यह 1936 में संकलित किया गया। इस उपन्यास में तत्कालीन समाज की जाति समस्या, सामन्तवादी शोषण, किसानों की समस्या, बेमेल विवाह इत्यादि समस्याओं का चित्रण किया है। एक समस्या जिसे उभारा गया है वह है किसान का आत्मसंघर्ष तथा बाह्य संघर्ष, जिसके आगे होरी की मौत भी हो जाती है।

गोदान की शुरुआत में ही होरी तथा धनिया गाय की इच्छा व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं " कौन नहीं चाहता कि घर के आगे गाय बंधी रहे xx जिसका दूध पीकर बच्चे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्वस्थ हो। इसके लिए वह गाय उधार पर ले आता है। गाय की मौत के बाद किसान का शोषण शुरू होता है।

गाय को लाने के क्रम में गोबर की मुलाकात झुनिया से होती है और झुनिया जब गर्भवती होकर होरी के घर आती है तो किसान पर मरजाद द्वारा भारी कर लगाया जाता है। यह दिखाता है किसान का सामाजिक शोषण।

तत्पश्चात् होरी का शोषण भारी कर के साथ सामन्तवादी के द्वारा दिखाया गया है, जहाँ राय साहब जैसे जमींदार किसानों का पैसा वसूल कर रहे हैं। यह है किसानों का सामन्तवादी शोषण।

इसी क्रम में होरी द्वारा अपनी पुत्रियों रूपा तथा सोना की शादी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी बेमेल विवाह से की जाती हैं जिससे उनका भी लगातार शोषण होता है। यह दिखाता है किसानों के परिवारों का संघर्ष।

जब किसानी कार्य से दुखी होकर गोबर शहर मे जाता है तो वह वहाँ भी पूँजीवादी व्यवस्था मे शोषण को महसूस करता है।

इसी क्रम में जब होरी शोषण की अनेक प्रताडना सहकर जब मृत्यु शय्या पर लेट चुका होता है तब भी ब्राह्मण को 'गौ' दान करना होता है जिस होरी की जीवन भर इच्छा गाय की रही जिसका उससे जीवन संघर्ष बढ़ा। उसकी मौत के बाद भी 'गौदान' का संघर्ष दिखाया गया है।

इसके अलावा होरी के जीवन में साहुकारों (दुलारी) ने भी शोषण

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यवस्था को जारी रखा था। उसके रुपये चुकाने के बाद दुबारा से माँग लिए जाते थे।

होरी का संघर्ष ज्यादा सार्थक इसलिए दिखता है कि प्रेमचन्द लेखन काल के अन्तिम समय मे हृदय-परिवर्तन की भावना से कठोर यथार्थवाद की अभिव्यक्ति पर बल दे रहे थे, जिससे वे होरी जैसे किसान का संघर्ष तथा करुणा की ~~[illegible]~~ गाथा को दिखाया है।

गोदान उपन्यास प्रेमचंद जी का तत्कालीन समाज में किसान संघर्ष की कथा है जो आज भी प्रासंगिक हो उठता है, जहाँ 1 घंटे में 15 किसान आत्महत्या कर रहे हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली की विशिष्टताओं का उद्‌घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का हिन्दी निबन्ध परम्परा मे वही स्थान है जो उपन्यास परम्परा मे प्रेमचन्द जी का तो नाटक परम्परा मे प्रसाद जी का।

शुक्ल जी मनोभावों के विषय पर निबंध ज्यादा लिखते थे। इसी क्रम में उन्होंने "श्रद्धा - भक्ति" निबंध लिखा जिससे निबंध विशिष्टताओं को देखते है-

(i) मनोभावों को परिभाषित करना

शुक्ल जी निबन्ध में मनोभावों को परिभाषित करते है, इसी क्रम में निबन्ध की शुरुआत मे ही उन्होंने श्रद्धा को परिभाषित किया है।

(ii) शब्दों की मितव्ययता

शुक्ल जी के निबंधों मे कम शब्दों मे ज्यादा भावार्थ को दिखाया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाता है जिससे सूत्र- शैली व्यक्त होती हैं। इसके प्रयोग से निबन्ध की प्रभाव क्षमता गुणित हो जाती हैं।

"श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।

(III) प्रसंग के अनुकूल शब्दों का प्रयोग

आचार्य शुक्ल ने प्रसंगानुकूल शब्दों का प्रयोग किया हैं, जिससे निबन्ध की प्रभाव क्षमता बढ़ जाती है। वे लिखते है.

"श्रद्धा मे घनत्व जितना अधिक है प्रेम में नहीं"

(IV) वैज्ञानिक शैली का प्रयोग

वैज्ञानिकता युक्त भाषा शैली का प्रयोग किया है जिससे कम शब्दों मे अधिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अर्थमयी रचना को व्यक्त किया है। साथ ही कटु भाषा का भी प्रयोग किया है-

"वे उसी प्रकार फटकराये जाएंगे.. जैसे सण्ड ... "

(v) शब्द विधानों की श्रृंखला

एक श्रृंखला में शब्द विधान की रचना से भाव ज्यादा अच्छे से निकलता है तथा सामान्य पाठक के समझ में आता है।

" जब जनसाधारण से विशेष गुण व भाव देखकर --- श्रद्धा कहलाती है।

शिल्पगत तौर पर तद्भव तथा तत्समी शब्दों का प्रयोग किया हैं। मुहावरेदार भाषा भी कई जगह प्रयोग में है।

हम कह सकते है कि शुक्ल जी के निबन्ध वैशिष्ट्य की बराबरी आज तक हिन्दी साहित्य में कोई नही कर पाया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

शुक्ल जी सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक आलोचना दोनों करते थे उन्होंने काव्य संबंधी सैद्धा. आलोचना का प्रतिपादन अपने निबंध '<u>कविता क्या है</u>' में किया है।

इस निबन्ध में शुक्ल जी को कविता को 'भावयोग' की संज्ञा देते है तथा भावयोग को '<u>कर्मयोग</u>' तथा ज्ञान योग के समकक्ष रखते है।

"हृदय की मुक्तावस्था मे लीन होने की रसदशा को कविता कहते हैं।"

आगे शुक्ल जी काव्य दृष्टि मे भावना, कल्पना, भाषा, उक्तिवैचित्र्य, चमत्कार, सौन्दर्य इत्यादि पर नजर डालते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वप्रथम कल्पना पर लिखते हैं किसी दूर वस्तु को सामीप्य लाकर अनुभूति करा देना कल्पना होता है। कल्पना को विधायी तथा ग्राहक में विभाजित किया, जहाँ विधायी कल्पना कवि के लिए आवश्यक है तो ग्राहक पाठक के लिए।

अलंकार के विषय मे शुक्ल जी भामह, उद्भट की आलोचना करते हैं वे कहते हैं " जिस प्रकार एक कुरूप स्त्री ---- उसी प्रकार अलंकारों का प्रयोग वांछनीय नहीं है।" इस क्रम में वे सूर की आलोचना भी करते हैं।

भाषा के सन्दर्भ मे शुक्ल जी चित्रयुक्त भाषा पर बल देते है। वे कहते हैं - 'भाषा मे बिम्ब ग्रहण अपेक्षित होता है।" साथ ही शब्द चयन मे भी कवि तथा शास्त्र के लिए बताते हैं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

वही शब्दों की नाद सौन्दर्यता पर बल देते हैं जिससे कविता की रुप बढ़ जाती है। वे उदाहरण लिखते हैं

घहरि घहरि घमके हर्षे।

उक्तिवैचित्र्य में शुक्ल जी भावप्रेरित वक्रता को उपयुक्त मानते हैं, सूरदास की प्रशंसा भी करते हैं लेकिन बुद्धिप्रेरित वक्रता का कयाहा करते हैं।

शुक्ल जी सौन्दर्य को आन्तरिक पक्ष मानते हैं लेकिन वे कहते हैं- "सौन्दर्य आन्तरिक होता है लेकिन जहाँ आन्तरिक व बाह्य दोनों हो उसका कहना ही क्या"

इस तरह साहित्यिक क्षमताओं को निबन्ध में व्यक्त किया है यह मुक्तिबोध के 'साहित्यिक डायरी' में आज भी दिख जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'स्कंदगुप्त' नाटक की चरित्र-योजना की समीक्षा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'मैला आँचल' के पात्र बावनदास का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देशकाल, वातावरण और भाषा-शिल्प की दृष्टि से मैला आँचल की समीक्षा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु ने 1952 में 'मैला आँचल' उपन्यास का लेखन कर्म किया। यह उपन्यास उनका शुरुआती उपन्यास था लेकिन बाद के उपन्यास जैसे- ~~परिक~~ परती परिकथा से भी बेहतर दिखता है।

रेणु ने उपन्यास के शुरुआत में ही लिखा है-

"यह है मेरीगंज ... मैंने इस एक गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर साहित्य रच दिया।"

देशकाल वातावरण के अनुसार यह मेरीगंज गाँव या अंचल की कहानी है लेकिन रेणु ने इस गाँव को प्रतीक माना है। ऐसे गाँव हिन्दुस्तान के हर कोने में दिख जाएंगे जिससे यह उपन्यास देशकाल का अतिक्रमण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करता है। तुलनात्मक स्तर पर देखें तो गोदान में प्रेमचंद गाँव की कोई विशेष सूचना देने से रुके हैं क्योंकि वे राष्ट्रीयता को उपन्यास समर्पित कर रहे थे।

वातावरण में रेणु ने 1952 के समाज की सभी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों को व्यक्त किया है। राजनीति में बावनदास के द्वारा कॉंग्रेस का चरित्र तथा 'खेलावन' के द्वारा समाजवाद का चित्रण किया है। वहीं समाज मे फैल रही जाति समस्या को भी व्यक्त किया है। लेकिन साथ-साथ वे मेरीगंज की सांस्कृतिक वर्णन करने से भी नहीं चूके हैं- कई जगह बिदापत के नृत्य तो कहीं जाट-जाटिन के खेल।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नायक जी ओ नायक जी
खोल देहो किवड़िया जी
ओ नायक जी

शिल्प भाषा की दृष्टि से विचार करे तो भाषा मे देशज तथा तद्भव शब्द आते है तो अंग्रेजी के कई शब्दों का विकृत रूप आता है।

अंग्रेजी का विकृत रूप → मैंसचरमन, माहटर जी

देशज - धमकौआ, समासम।

वही प्रशांत जैसे चरित्रों से तत्समी भाषा भी मिलती है।

भाषा में मुहावरें तथा लोकोक्तियाँ का प्रयोग हुआ है जिससे अर्थवत्ता में बढ़ोत्तरी होती है।

जोर जमीन जोर का, नाहि तो काहू का नाहि

वही जगह-जगह ग्रामीण शैली

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रूप मे बीजक तथा अन्य महाकाव्यों का सन्दर्भ लेकर बात की सत्यता को साबित किया है। जहाँ एक जगह "कोई आखर प्रेम का" सन्दर्भ लिया है।

हालांकि रेणु की भाषा शिल्प को लेकर आक्षेप है कि ये बाहरी लोग नही समझ पाते। यह आक्षेप सभी आँचलिक उपन्यासों पर लगता है। यह भी सत्य है ऐसा आँचलिक उपन्यासकार भारत मे कोई दूसरा नही हुआ। इनकी तुलना पश्चिम के लुकाच तथा फॉकनर से की जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद द्वारा विशाखा, चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, अग्निमित्र इत्यादि अनेक नाटकों की रचना की। स्कंदगुप्त नाटक 1928 मे संकलित किया गया था।

प्रसाद जी नाटक मे इतिहास का उपयोग रोमानी तरीके से करते थे, वे इतिहास का उपयोग कर आधुनिक समस्या उठाते थे। जब नाटक का नाम 'स्कंदगुप्त' आता है तो एकाएक प्रश्न उठता है यह नाम क्यों रखा?

नामकरण तो वह होता है जिसको पढ़ कर सारे कथ्य की अनुभूति हो, उसी प्रकार जब 1928 मे भारत के सामने पराधीनता की समस्या थी तब प्रसाद जी ने स्कंदगुप्त को चुना क्योंकि उन्होंने समस्त आर्यावर्त की हूणों से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रक्षा की थी। ~~इसी~~ इसिलिए वे स्कंदगुप्त के माध्यम से विजय का बोध करवा रहे थें।

दूसरा कारण खोजे तो पाते है प्रसाद जी की नाट्य परम्परा में चरित्र प्रधान नाटक न तो संस्कृत परम्परा से मिला, नहीं ग्रीक नाट्य परम्परा व न ही पारसी नाट्य परम्परा से। वे तो स्वयं स्वच्छंदतावादी नाटककार थे जिसमें चरित्र के माध्यम से पूरे कथ्य को प्रस्तुत किया।

तीसरा कारण प्रसाद आनंदवाद दर्शन से प्रभावित थे जिसमें समस्या विषमता की आती है वहीं समस्या जो कामायनी के मनु की है तो मुक्तिबोध के ब्रह्मराक्षस की। उस आनंदवाद की अभिव्यक्ति स्कंदगुप्त के माध्यम से होती है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जब स्कंदगुप्त कहते हैं-

"अधिकार सुख कितना मादक तथा सारहीन है।"

"मुझे ---- पागलों की विस्मृति चाहिए"

यह स्कंदगुप्त नामकरण सिद्ध होता है लेकिन यह विचार करें कि यह नाम न तो होता तो क्या होता देवसेना। यह सिर्फ भावनाओं से प्रयुक्त है तथा छायावाद प्रेमभाव दिखता है वही स्थिति प्रधान नाम जैसे "हूणों का आक्रमण" भी अंगीरस का निर्धारण नहीं कर पाता।

हम कह सकते हैं 'स्कंदगुप्त' नाम नाटक का उचित है जिससे 'आनंद रस' नामक अंगीरस का बोध होता है और कथानक वसी के आस-पास बुना गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी उपन्यास की विकासयात्रा में 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व के कारणों का निर्देश कीजिये। 15

मन्नू भण्डारी ने महाभोज, आपका बंटी इत्यादि उपन्यासों का लेखन कर्म किया। महाभोज उपन्यास से हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा को देख सकते है।

महाभोज उपन्यास बेलछी काण्ड (1970 के दशक) मे हुआ था, तब के भारत की सामाजिक - राजनीतिक स्थितियों का वर्णन तथा मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियो की समीक्षा की है।

मन्नू भण्डारी जी ने 'राजनीतिक विद्रुपताओं' को व्यक्त किया है कि एक व्यक्ति 'बिदा' की मौत कई पार्टी के लोगों के लिए अवसर का मौका है तो दूसरी पार्टी के लोग उसे दबा रहे है कथानकमे एक प्रसंग आया भी है-

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

"एक ही बात को कई ढंग से कहने के गुर मालूम थे दा साहब को।

वहीं राजनीतिक पार्टियाँ जोरावर जैसे अपराधियों को शरण देकर सिर्फ वोटों की राजनीति कर रही हैं।

सामाजिक विद्रूपताओं में जाति व्यवस्था का प्रचण्ड रूप दिखता है जहाँ जोरावर कहता है-

"इन हरिजनों के माँ बाप हमारे बाप-दादाओं के सामने कमर झुकाए रहते थे। झुके-झुके कमर तीर कमान हो जाती थी मजाल है कि ऊपर उठा ले और आज --- × × .."

जातिगत भेदभाव को दिखाया है।

वहीं शहर के पुलिसकर्मी द्वारा गाँव के लोगों के प्रति भावना शहर-ग्रामीण संस्कृति की जुड़ाव की हिन्दी साहित्य की परम्परा को दिखाता है जहाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शहरी व्यक्ति ग्रामीण व्यक्ति से नफरत करता है।

वहीं इन समस्याओं के प्रति बुद्धिजीवी वर्ग को दिखाया है कि अखबार के उठाते ही जो झुरियाँ चेहरे पर आई वो तीन-चार पेज पर जाकर सामान्य हो गई। जिससे मध्यजीवी वर्ग का तटस्थता रुख दिखता है। हालांकि उपन्यास के अन्त में पुलिस ऑफिसर जो महेश को छोड़ कर भाग आया था। उसका हृदयपरिवर्तन होता है। उपन्यास खत्म होता है ..

वह दुर्निवार सम्मोहन भरी आग
बिंदा की मौत तक नहीं रुकी।

महाभोज में हिन्दी साहित्य के विकास यात्रा को देखा जा सकता है। ये समस्याएँ आज भी किसी दूसरे रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: **$10 \times 5 = 50$**

(क) नील कमल की तरह कोमल और आर्द्र, वायु की तरह हल्का और स्वप्न की तरह चित्रमय! मैं चाहती थी उसे अपने में भर लूँ और आँखें मूँद लूँ। ...मेरा तो शरीर भी निचुड़ रहा है माँ! कितना पानी इन वस्त्रों ने पिया है!ओह!
शीत की चुभन के बाद उष्णता का यह स्पर्श!

प्रस्तुत गद्यांश आधुनिक नाटककार मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ के एक दिन से लिया गया है जिसमें सत्ता-सर्जक संघर्ष, अस्तित्ववादी दर्शन तथा शहरी-ग्रामीण संघर्ष केन्द्र बिन्दु में है।

प्रस्तुत पंक्तियों मे जब मल्लिका भीग कर आती है तो अम्बिका को आषाढ़ की प्रथम बारिश में भीगने का सुखद अनुभव बता रही हैं।

मल्लिका कहती है कि आषाढ़ महीने की प्रथम बारिश में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वर्षा की बूँदे तथा हल्की-हल्की वायु का बहन मुझे सुकुन दे रहा था। मैं मेरे सपने के अनुसार जीवन मे थी। मै चाहती थी कि मैं उसी में रहूँ, उसी मे भीगूँ जिससे जीवन की सार्थकता बनी रहे। इतना भीगने के बाद चुल्हे के आगे बैठने पर जो मन मे शान्ति आती है वह और कहीं नहीं है।

विशेष

① नवनाट्य लेखन की परम्परा के अनुरूप चित्रमयी भाषा का प्रयोग हुआ है।

② भाषा प्रवाहमय है।

③ प्रकृति का स्पर्श दिखाया गया है।

④ अस्तित्ववादी दर्शन को दिखाने के लिए रचना मे इनसे आधार बनाया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

उपरोक्त पंक्तियाँ राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित 'एक दुनिया समानान्तर' के रघुवीर सहाय की कहानी 'विजेता' से ली गई है।

पंक्तियों का सन्दर्भ तब आता है जब गर्भपात के बाद भी बच्चा बच गया है।

रघुवीर सहाय कहते है कि दो बार तुमने उसे नष्ट करने की कोशिश की। वह नष्ट हो गई। लेकिन मैं जानती हूँ कि वह अभी भी जिन्दा है तुम उस पर बार-बार आक्रमण कर चुके हो लेकिन वह फिर भी बच गई है वह उसके द्वारा बचा ली गई है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① सूत्र भाषा का प्रयोग हुआ है।

② हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है।

③ प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियाँ मार्क्सवादी उपन्यासकार यशपाल के उपन्यास 'दिव्या' से ली गई है जिसमें वे नारी समस्याओं को केन्द्रीयता से उठाते है।

सन्दर्भ तब आता है जब पृथुसेन राजकन्या विजया से शादी ना करके दिव्या को चुनता है तब प्रेस्थ पृथुसेन को समझा रहे है।

प्रेस्थ कहता है कि पृथुसेन एक युवती के मोह में मेरी जिन्दगी की समस्त मेहनत को खराब कर रहे हो। उसी सन्दर्भ मे वह चाणक्य का कथन कहता है। आगें प्रेस्थ कह रहा है बेटे! स्त्री भोग के लिए पैदा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हुई है जब पुरुष की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तब वह स्त्री के लिए बलिदान करता है। ऐसी स्थिति में नीतिकारों ने नारी को विनाश का द्वार कहा है।

विशेष

① नारी की पराधीनता तथा नारी को भोग्य दिखाया है।

② चाणक्य के कथन से प्रेरणा से वक्तव्य को सिद्ध किया है।

③ प्रसंगानुकूल वातावरण युक्त भाषा का प्रयोग किया है।

④ तत्सम शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें।! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

उपरोक्त पंक्तियाँ आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' से ली गई है जिसमे ग्रामीण जीवन की भौगोलिक-सांस्कृतिक जीवन को दिखाया गया है।

सन्दर्भ में पंक्तियाँ ग्रामीण जीवन की सुन्दरता को व्यक्त करती है।

लेखक कहता है धरती माता का आँचल सोने जैसा हो गया है। गेहूँ की फसल पक चुकी है। पुरवा के कारण सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे है। कमला नदी के गड्ढे, कोठी का बाग, झरबेली के जंगल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की सभी चीजे डॉक्टर प्रशांत को नई-नई लगती है। कोयल की आवाज में मजदूरों की आधी रात की आवाज को अनुभव करने लगा है। डॉ प्रशांत गाँव के माहौल में रम गया है।

विशेष

(I) ग्रामीण संस्कृति का वर्णन किया है।

(II) "स्वर्णचिल" उपमा अलंकार है।

(III) तत्सम शैली का प्रयोग डॉ प्रशांत के प्रसंगानुकूल है।

(IV) प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है। अपने को नियामक और कर्त्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है। उत्सवों में परिचारक और अस्त्रों में ढाल से भी-अधिकार लोलुप मनुष्य क्या अच्छे हैं? उंह। जो कुछ हो, हम साम्राज्य के एक सैनिक हैं।

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक नाटककार जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कंदगुप्त' से ली गई है। जिसमें प्रसाद जी ऐतिहासिक चरित्र लेते हुए नवजागरण का प्रयास कर रहे है।

सन्दर्भ मे स्कंदगुप्त के आनंदवाद दर्शन को केन्द्र मे रखा है और उसके बारे मे वर्णन किया है।

स्कंदगुप्त सोचता है अधिकार सुख कितना नशा पैदा करता है। जिसके बल पर खुद को नियामक तथा कर्ता समझ बैठता है और वह उसके विनाश का कारण बनती है। उत्सवो में परिचारक तथा अस्त्रों मे ढाल से भी अधिकार क्यों चाहिए। उससे ज्यादा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अधिकार क्यों चाहिए। वह आगे सोचता है मुझे क्या मैं साम्राज्य का एक सैनिक हूँ।

विशेष

1. स्कंदगुप्त के माध्यम से अंगीरस 'आनंद' को दिखाया गया है।
2. प्रसंगानुकूल तत्सम भाषा का प्रयोग किया है।
3. भाषा प्रवाहमयी है।
4. सूत्र भाषा का प्रयोग हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) क्या आप कतिपय आलोचकों के इस मत से सहमति रखते हैं कि गोदान मनुष्यों की नहीं मनुष्य की कथा है? अपना मत प्रकट करते हुए होरी की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'देवसेना' हिन्दी नाट्य परंपरा की अविस्मरणीय चरित्र है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? सहमति या असहमति के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'नई कहानी' की विशेषताओं के संदर्भ में राजेंद्र यादव की कहानी 'टूटना' पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के रचनाकर्म के प्रति डॉ. रामविलास शर्मा के मत की उपस्थापना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कुबेरनाथ राय के निबंधों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' के आधार पर उनकी साहित्य-संबंधी मान्यताओं को प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जिस प्रकार शुक्ल जी ने काव्य प्रतिमानों के लिए 'कविता क्या है'' निबन्ध का प्रयोग किया। वही मुक्तिबोध ने 'साहित्यक डायरी'। उसी प्रकार प्रेमचंद ने कवि या लेखक की साहित्य की प्रगतिशीलता को इस निबंध में दिखाया गया है।

(I) प्रेमचंद साहित्यकार को प्रगतिशील मानते है। वे कहते है -

"साहित्यकार प्रगतिशील होता है अगर वह नही होता तो साहित्यकार न होता।"

(II) प्रेमचंद अपने समय के रोमांटिक, नश्वरवादी तथा मनोरंजनकारी साहित्यिक क्षमता को पूर्णतः खारिज करते है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) प्रेमचंद साहित्य की सामाजिक उपयोगिता पर बल देते हैं वे समाज के काम न आने वाले साहित्य को प्रगतिशील साहित्य के अन्तर्गत शामिल नहीं करते।

(iv) साहित्यकार प्रगतिशीलता को मूलतः वे जन्मजात मानते हैं लेकिन उससे भी आगे वे ज्ञानार्जन तथा प्रयास को महत्व देते हैं। वे साहित्य में जो प्रगतिशीलता को लेकर लगातार मेहनत कर रहा है उसे श्रेष्ठ मानते हैं

(v) प्रेमचंद समाज तथा सामाजिक प्रेम के विषय को निबन्ध का विषय बनाते हैं।

साहित्यकार का लक्ष्य भीड़ जुटाना तथा महफिल जुटाना नहीं है इससे भी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आगे वह समाज मे प्रभाव डालने वाली होनी चाहिए।

(VI) प्रेमचंद साहित्यकार के लिए स्वतः स्फूर्त भावों की जगह विशेष विशेष चयन पर बल देते है। वे कहते है भावों का उचित प्रबंध का समाज के प्रयोगशीलता तथा प्रगतिशीलता में उपयोग किया जाना चाहिए।

(VI) प्रेमचंद साहित्य कर्म को सेवा कर्म का दर्जा देते है वे धन उपार्जन के कर्म का बनाने से साफ इंकार कर देते है। वे कहते है

" धन के लिए मंदिर मे उपासक --- काव्य तो प्रगतिशीलता में समाज के सभी पहलुओं को व्यक्त करने वाला हो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(viii) प्रेमचंद जनसाधारण के लिए साधारण भाषा व शिल्पों के प्रयोग पर बल देते हैं जिससे साहित्य से ज्यादा जुड़ाव महसूस कर सके।

(ix) भाषा को ऐसी प्राथमिकता देनी चाहिए क्योंकि वही संचार का माध्यम होता है।

कहा जा सकता है प्रेमचंद का निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' साहित्य संबंधी मान्यताओं को प्रस्तुत करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'रेणु का कथा शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक माने में ठीक है, पर उपन्यास की दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समोया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

फणीश्वरनाथ रेणु आँचलिक उपन्यासकार थे। उन्होंनें मैला आँचल में अन्चल का नायकत्व पेश किया। इस सन्दर्भ मे कथा शिल्प आंचलिक कहा जाता है।

आँचलिक कथा शिल्प मे तद्भव तथा देशज शब्द तथा अंग्रेजी शब्दो का विकृत रूप सामने आता है। जैसे- थैंसयरमन इत्यादि। साथ ही कथा मे अनेक शब्द स्थानीय भाषा से आते है। और रेणु खुद भी कहते हैं-

"यह है मैला आँचल -- एक आँचलिक उपन्यास -- ××× इसी एक गाँव को पिछड़े गाँवो का प्रतीक मानकर कथानक की रचना कर दी।

रेणु ने कहा है कि इस तरह के गाँव

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत मे कोने - कोने मे मौजूद है जिससे यह उपन्यास आँचलिकता में राष्ट्रीयता का बोध समाए हुए है।

वही बात गोदान की करे तो प्रेमचंद जी कहते है -

"अवध प्रान्त के बेलारी तथा सेमारी गाँव की कथा है जिला बताने की जरुरत नहीं है।"

गोदान मे कथानक मे देशकाल-वातावरण मे राष्ट्रीयता का बोध होता है जहाँ प्रेमचन्द कोई भी संकेत देनें से बचे है जबकि रेणु ने संकेत दिया है इससे कहा जा सकता है कि रेणु के उपन्यास को एक 'अंचल' का वर्णन किया है लेकिन उसका प्रभाव भारत के कोने - कोने मे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिखता है तो गोदान की कथा सम्पूर्ण भारत के हर जिले में किसान संघर्ष, बेमेल विवाह, सामाजिक कुरीतियाँ दिखाती है जो हर कहीं दिखती है।

प्रश्न यह है कि गोदान के आगे की कथा मैला आंचल रहता है। यह बात कुछ हद तक सही है गोदान राष्ट्रीय प्रतिनिधि महाकाव्य है, वहीं उन्हीं समस्याओं को एक सूक्ष्म रूप में मैला आँचल दिखाता है जिसमें चाहे राजनीतिक विद्रूपता हो या सामाजिक कुरीतियाँ।

हालांकि राजनीतिक विद्रुपताओं, शहरी कथा, सामन्तवाद, पूँजीवाद इत्यादि जगहों में दोनों कथाओं में अन्तर भी दिखता है।

मैला आँचल तथा गोदान दोनों उपन्यास प्रतिष्ठित उपन्यास है जो अपनी महाकाव्यता दिखाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'अप्रमाणिकता का संकट' 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की संवेदना का मुख्य पक्ष है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश नवनाट्य दौर के लेखक है। वे कालिदास के प्रसंग का सहारा लेकर 'आषाढ के एक दिन' नाटक ~~की~~ ~~अप्रमाणिकता~~ के लगभग सभी पात्रों से अप्रमाणिकता का बोध कराते है।

नाटक के शुरु मे मल्लिका कहती है-

"क्या अधिकार उन्हें कुछ कहने का मल्लिका का जीवन उसकी खुद सम्पति की है वो जी मे आए वो करे।"

यह प्रमाणिकता दिखाती है लेकिन आगे वही मल्लिका जब कालिदास लौटकर आता है तब कहती है-

"मैं तुम्हारे जीवन मे नहीं रही लेकिन तुम मेरे जीवन मे सदा बने रहे। आपकी रचना पढ़कर मैं सार्थकता महसूस करती हूँ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वही मल्लिका का जीवन अप्रमाणिक हो जाता है।

वही कालिदास जो गाय-भैंस चराता है जब राजदरबार को चुनता है और उसके बाद कश्मीर का राजा मातृगुप्त बनता है, ये दोनो निर्णय उसकी अंतरात्मा से न होकर बाह्य परिस्थितियों पर आधारित थे। वह स्वयं स्वीकारता है-

"मुझे भीगने दो, यह भीगना ही मेरी सार्थकता है। वर्षों बाद भीगा हूँ। .. भीगने से मेरा वर्षों का ज्वर उतर गया है।"

वस्तुतः सार्त्र, कामू अप्रमाणिकता को समझाते है कि जब व्यक्ति द्वारा निर्णय अप्रमाणिक या बिना अंतरात्मा के प्रयोग से लिया जाएगा तो उसका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जीवन अप्रमाणिक हो जाएगा। कालिदास का पहला निर्णय राजधानी तथा दूसरा राजा बनना इसका द्योतक है।

इसी क्रम में वह अन्त मे प्रयास करता है कि अब कोई नया महाकाव्य यहाँ लिखा जाए।

आषाढ़ के एक दिन मे इसके अलावा सर्जन- सत्ता का द्वन्द्व, प्रशासनिक अधिकारियों का कम बौद्धिक होना तथा ग्रामीण - शहरी लोगों का प्रकृति प्रेम को विषय भी बनाया गया है।

इन सबके होते हुए भी अप्रमाणिकता का संकट आषाढ़ का एक दिन की मुख्य संवेदना है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation